MA (Semester I)
Unit I, Paper II
advance Social Psy.

Topics – Determinants of pro-social behaviour

निम्नलिखित कारणों से व्यक्ति समाजउपयोगी कार्य करने के लिए प्रेरित होता है।

(1.) समाजउपयोगी कार्य करना व्यक्ति में पाए जानेवाले नैसर्गिक प्रवृति के कारण होती है।

(2) भावात्मक दशा के कारण व्यक्ति प्रेरित होता है।

(3.) व्यक्ति समाज में रहकर समाजउपयोगी कार्य करना सीख जाता है जो उसके समाजीकरण का फीचर कहाता है।

(4) कुछ संस्कृतियाँ ऐसी होती है जिनमें समाजउपयोगी कार्य करने की प्रवृति पाई जाती है।

(5) जब दूसरों की सहायता करने की माँग या आवश्यकता रहती है तो व्यक्ति समाजउपयोगी व्यवहार ज्यादा करता है जो सामाजिक मानक के प्रयोग होने के कारण होता है जो तीन प्रकार का होता है।

(क) सामाजिक उत्तरदायित्व — इसमें व्यक्ति को यह आभास होना चाहिए कि समाज के दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों को मदद करने का सामाजिक उत्तरदायित्व उनका है।

(ख) परस्परता — उस व्यक्ति की मदद करनी चाहिए जिसने पहले हमारी मदद की है।

(ग) न्यायसंगत होना — हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक व्यक्ति की कब और किस परिस्थिति में मदद करनी चाहिए।

(6) जिस व्यक्ति को मदद की आवश्यकता हो परन्तु वह इसके लिए इच्छुक नहीं हो और मदद मिलने पर वह अपमानित महसूस करता हो तो उसे मदद नहीं करना चाहिए।

(7.) तदनुभूति (Empathy) के कारण समाजपयोगी कार्य करने की संभावना ज्यादा होती है इसका अर्थ हुआ कि मदद पाने वाले व्यक्ति की जगह पर मदद करने वाला व्यक्ति अपने को रखकर उसके समान अनुभूति करे तब उसकी मदद कर पायेगा।

(8) यदि जिस व्यक्ति को मदद की जरूरत है वह अपने स्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार है तो समाजपयोगी कार्य करने की संभावना कम हो जाती है।

(9) अनुकरण – जब हम अपने संबंधियों, सहकर्मियों, परिचितों, मित्रों को दूसरों की मदद करते देखते हैं तो हम भी उनका अनुकरण करके दूसरों की मदद के लिए प्रेरित होते हैं।

(10) भावात्मक अवस्था – इस अवस्था में समाजपयोगी व्यवहार करने की संभावना अधिक रहती है जब समाजपयोगी व्यवहार करने वाले व्यक्ति की मनोदशा आनंद एवं सुखद हो तो उसकी समाजपयोगी व्यवहार करने की संभावना अधिक होती है।

(11) उत्तरदायित्व का बिखराव – जब व्यक्ति अकेला रहता है तो उसके परोपकारिता का भाव अधिक देखा जाता है और उसके जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता करने की प्रवृत्ति एवं संभावना अधिक रहती है अर्थात वह समाजपयोगी व्यवहार करता है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara